विकसित भारत अभियान
1947 TO 2047

ACCREDITED WITH GRADE A+ NAAC

दो दिवसीय
अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्ति साहित्य

12-13 मार्च, 2026

आयोजक

हिंदी विभाग
झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय
चेरी-मनातू, राँची (भारत) -835222

मुख्य संरक्षक
प्रो. क्षिति भूषण दास
माननीय कुलपति

संरक्षक
श्री के.के.राव
कुलसचिव

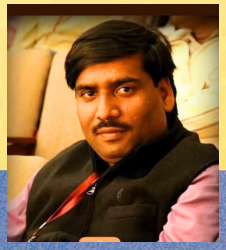

अध्यक्ष
प्रो. रत्नेश विष्वक्सेन
विभागाध्यक्ष

आयोजन सचिव एवं संयोजक
डॉ. उपेन्द्र कुमार 'सत्यार्थी'
सहायक प्रोफ़ेसर

सह-संयोजक
डॉ. रवि रंजन कुमार
डॉ. जगदीश सौरभ
डॉ. निवेदिता प्रसाद

परामर्श समिति

प्रो श्रेया भट्टाचार्जी, प्रोफेसर एवं भाषा संकायाध्यक्ष
प्रो टी. के बसंतिया, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
प्रो सुचेता सेन चौधुरी, प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग
प्रो अर्चना कुमारी, प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
प्रो देवव्रत सिंह, प्रोफेसर, जनसंचार विभाग,
प्रो. विमल किशोर, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
डॉ. रंजीत कुमार, सह-आचार्य, अंग्रेजी विभाग
डॉ. मयंक रंजन, सह-आचार्य, अंग्रेजी विभाग
डॉ. शशि सिंह, सह-आचार्य, शिक्षा विभाग
डॉ. कोंचोक तासी, सह-आचार्य, सुदूर पूर्व भाषा विभाग, तिब्बती
डॉ. रजनीकान्त पाण्डेय, सह-आचार्य, मानव विज्ञान विभाग

आयोजन समिति

डॉ. सुदर्शन यादव, सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग
डॉ. राजेश कुमार, सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग
डॉ. कलसंग वांगमो, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग
डॉ. अर्पणा राज, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग
डॉ. संदीप विश्वास, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग
श्री शशि कु. मिश्रा, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग
डॉ. मुकेश जायसवाल, सहायक आचार्य, सुदूर पूर्व भाषा विभाग
डॉ. शाकिर तसनीम, सहायक प्रोफ़ेसर, प्रदर्शन कला विभाग
डॉ. वेंकट नरेश बुरला, सहायक प्रोफेसर, प्रदर्शन कला विभाग
डॉ. शिवकुमार एम., सहायक प्रोफेसर, प्रदर्शन कला विभाग
श्री सुशांत कुमार, सहायक प्रोफ़ेसर, सुदूर पूर्व भाषा विभाग
श्री रचित कुमार, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
डॉ. प्रज्ञा शुक्ला, सहायक प्रोफ़ेसर, अंग्रेजी विभाग
डॉ. सुधांशु शेखर, सहायक प्रोफ़ेसर, अंग्रेजी विभाग
डॉ. अमृत कुमार, सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग
डॉ. रश्मि वर्मा, सहायक प्रोफ़ेसर, जनसंचार विभाग
डॉ. सुभाष कु. बैठा, सहायक प्रोफ़ेसर, अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग
डॉ. शशांक कुलकर्णी, सहायक प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
डॉ. संजय कु. अग्रवाल, सहायक प्रोफ़ेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
डॉ. शिल्पी राज, सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग
डॉ. मनोहर कुमार दास, सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग
डॉ. नीरा गौतम, सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग
डॉ. मानवी यादव, सहायक प्रोफ़ेसर,शिक्षा विभाग
डॉ. विजय कुमार यादव, सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग
श्री मधुरागी श्रीवास्तव, हिन्दी अधिकारी
श्री नरेंद्र कुमार, जन संपर्क अधिकारी

छात्र समन्वय समिति

सूरज रंजन, रवि रंजन, दीपक कुमार, ज्योति झा, प्रीति सिंह, सौरभ कुमार, रामश्याम कुमार विश्वकर्मा, अंशु प्रिया, चंदन कुमार सिंह, अभिषेक सिंह, रूमा कुमारी, सुनीता कच्छप, मनीष कुमार दुबे, भुवनेश कुमार प्रधान, योगिता कुमारी

विश्वविद्यालय का परिचय

केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 के तहत झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजे) 1 मार्च, 2009 को "नवाचार, रचनात्मक प्रयासों और विद्वतापूर्ण अन्वेषण को बढ़ावा देने, व्यक्तियों, राष्ट्र और दुनिया की शांति-समृद्धि हेतु, एक सजग समाज एवं प्रबुद्ध नागरिक के निर्माण करने" के दृष्टिकोण के साथ अस्तित्व में आया। यह विश्वविद्यालय झारखंड राज्य का एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय है. इसके साथ ही झारखंड प्रदेश का यह एक मात्र राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा ग्रेड A+ प्राप्त विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (एनईपी-2020) के तहत 21 एकीकृत स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम, शैक्षणिक सत्र 2024-25 में 12 स्नातकोत्तर और 20 डॉक्टरेट कार्यक्रम उपलब्ध करा रहा है। इस विश्वविद्यालय का लक्ष्य बहु-विषयक शिक्षा, एक मजबूत चरित्र के निर्माण और मूल्य-आधारित पारदर्शी कार्य नैतिकता के पोषण के माध्यम से, प्रबुद्ध समुदाय के निर्माण, भारत के लोगों के समग्र विकास और आत्मनिर्भरता तथा रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देने हेतु परिवर्तन के एक प्रतीक के रूप में सेवा करना है। विश्वविद्यालय अधिगम के शुद्ध और अनुप्रयुक्त क्षेत्रों में शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार में उत्कृष्टता के वातावरण की संरचना करके इस उद्देश्य को प्राप्त करना चाहता है। इस विश्वविद्यालय का लक्ष्य अधिगम की शाखाओं में यथोचित अनुदेशात्मक और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान करके ज्ञान का प्रसार और विस्तार करना, अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एकीकृत पाठ्यक्रमों के लिए विशेष प्रावधान नियत करना, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और अंतःविषयी अध्ययन और अनुसंधान में नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए उचित उपाय करना, देश के विकास के लिए जनशक्ति को शिक्षित और प्रशिक्षित करना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए उद्योगों के साथ संबंध स्थापित करना, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के सुधार और लोगों के कल्याण, उनके बौद्धिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास पर विशेष ध्यान देना आदि है। यह विश्वविद्यालय झारखंड राज्य की राजधानी 'रांची' में स्थित है. यह शहर समुद्र तल से 2140 फीट की ऊंचाई पर 23.23 एन अक्षांश और 85.23 ई देशांतर पर स्थित है। इस विश्वविद्यालय का परिसर चेरी-मनातू गाँव के मध्य में स्थित है जो रांची रेलवे स्टेशन से लगभग 18 किलोमीटर और बिरसा मुंडा हवाई अड्डे से लगभग 25 किलोमीटर दूर है। यह परिसर आईटीबीपी के साथ रांची रिंग रोड से जुड़ा है।

विभाग का परिचय

झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना 18 जनवरी 2018 को हुई। विश्वविद्यालय का यह नवनिर्मित हिन्दी विभाग भाषा एवं साहित्य के उत्थान को लेकर कृत संकल्पित है और अपने बहुआयामी उद्देश्य को लेकर कटिबद्ध है। साहित्य की संस्कृति व चिंतन की मौलिकता, अभिव्यक्ति में तार्किकता और सामाजिक दायित्व की पहचान करने का संकल्प लेकर विभाग को स्थापित किया गया है। विभाग का उद्देश्य छात्रों एवं शोधार्थियों में साहित्य एवं समाज के प्रति उत्तरदायी एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना है तथा ज्ञानार्जन के अतिरिक्त रोजगार की दृष्टि से कौशल विकसित करना है। साहित्य की संस्कृति, चिंतन की मौलिकता, रचनात्मकता का भरोसा, अभिव्यक्ति में तार्किकता के साथ विनयशीलता और सामाजिक दायित्व की पहचान को मनुष्य होने की यात्रा से जोड़ने का संकल्प लेकर विभाग को स्थापित किया गया है और इसे ध्येय बनाकर लक्ष्य में परिवर्तित करना ही काम्य है। विभाग का उद्देश्य छात्रों एवं शोधार्थियों में साहित्य एवं समाज के प्रति उत्तरदायी एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना है। ज्ञानार्जन के अतिरिक्त रोजगार की दृष्टि से कौशल विकसित करना प्रमुख है। साहित्यिक शोध, भाषा शिक्षण, अनुवाद, विदेशी हिंदी शिक्षण, पटकथा लेखन, प्रूफ़ रीडिंग, आदि विभागीय अध्ययन-अध्यापन के केंद्र में हैं।

संगोष्ठी की संकल्पना

भारतीय ज्ञान परंपरा एक ऐसी शाश्वत सरिता है जो सदियों से मानवीय चेतना को सिंचित कर रही है। यह परंपरा केवल सूचनाओं का संचय नहीं, बल्कि वह जीवन-दर्शन है जिससे हमारे व्यक्तित्व और संस्कृति का निर्माण हुआ है। वेदों और उपनिषदों के जिस सूक्ष्म दार्शनिक चिंतन से इस यात्रा का प्रारंभ हुआ था, वह मध्यकाल में 'भक्ति काव्य' के रूप में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची। भक्ति साहित्य ने प्राचीन ज्ञान को लोकभाषा के माध्यम से जन-सामान्य के लिए सुलभ और व्यावहारिक बनाया। भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार स्तंभ वेद, उपनिषद, पुराण और महाकाव्य रहे हैं। जहाँ वेदों ने धर्म, विज्ञान, गणित और आयुर्वेद का विस्तार किया, वहीं उपनिषदों ने 'आत्मानुभूति' और 'ब्रह्म-ज्ञान' पर बल दिया। कालांतर में रामायण, महाभारत और भगवद्गीता ने इन दार्शनिक सत्यों को कथाओं के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया। मध्यकाल में जब समाज बाह्य आक्रमणों और आंतरिक कुरीतियों से जूझ रहा था, तब भक्ति आंदोलन ने इन प्राचीन स्रोतों से शक्ति ग्रहण कर एक नई चेतना का संचार किया। भक्ति साहित्य भारतीय वाङ्मय का वह कालजयी अध्याय है, जिसने दार्शनिक चिंतन को लोक-संवेदना के साथ एकीकृत किया। यह केवल एक धार्मिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और सामाजिक पुनर्जागरण था। भक्ति कालीन कवियों ने 'संस्कृत' के शास्त्रीय वर्चस्व को चुनौती देते हुए जन भाषाओं को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, यह 'लोक-धर्म' का उदय था, जिसने ज्ञान को जन-सुलभ बनाया। इस काल में 'गुरू' को ज्ञान का अंतिम स्रोत और मोक्ष का आधार माना गया। चाहे वह कबीर की निर्गुण साधना हो या जायसी का सूफी दर्शन, गुरु ही साधक को अज्ञानता के तिमिर से निकालकर सत्य (ब्रह्म) का साक्षात्कार कराता है। भक्ति साहित्य में ब्रह्म के दो वैचारिक धरातल मिलते हैं- निर्गुण और सगुण। जहाँ कबीर और नानक ने 'नाम' स्मरण और अंतर्मुखी साधना पर बल दिया, वहीं तुलसी और सूरदास ने मानवीय गुणों से युक्त अवतारवाद की स्थापना की। तुलसी के यहाँ इन दोनों का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। भक्तिकाल ने जन्म-आधारित श्रेष्ठता को नकार कर 'भक्ति' को योग्यता का नया पैमाना बनाया। रैदास, कबीर और नामदेव जैसे संतों ने सामाजिक विषमता और बाह्याडंबरों पर तीक्ष्ण प्रहार कर मानवीय समता का मार्ग प्रशस्त किया। इस साहित्य का केंद्र 'शास्त्र' नहीं बल्कि 'अनुभव' है। इन संतों ने न केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया, बल्कि एक सामाजिक क्रांति का सूत्रपात भी किया। इन्होंने समाज में व्याप्त अज्ञानता और ऊंच-नीच का विरोध कर 'प्रेम' को ईश्वर प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन बताया। इनके यहाँ ईश्वर के प्रति 'दास्य', 'साख्य', 'वात्सल्य' और 'माधुर्य' भाव की प्रधानता है, जो शुष्क ज्ञान के स्थान पर रागात्मकता को महत्व देती है। अकादमिक दृष्टि से भक्ति साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का वह प्रस्थान बिंदु है, जहाँ अध्यात्म ने सामाजिक सुधार का उत्तरदायित्व संभाला। इसने वैयक्तिक साधना को लोक-कल्याण के साथ जोड़कर एक समावेशी समाज की परिकल्पना प्रस्तुत की। निष्कर्षतः भक्ति साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की सर्वोत्तम उपलब्धि है। इसने प्राचीन ग्रंथों के जटिल ज्ञान को भावनाओं और लोकानुभवों के रस में डुबोकर जन-मानस तक पहुँचाया। आज भी यह साहित्य हमें नैतिकता, प्रेम और संयमित जीवन की प्रेरणा देता है। भक्ति साहित्य और ज्ञान परंपरा का यह मेल ही भारतीय संस्कृति की वह शक्ति है जो इसे आज भी प्रासंगिक बनाए हुए है।

विचार बिंदु

- भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि
- भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप
- भक्ति आंदोलन में भारतीय लोकज्ञान की भूमिका
- भक्ति आंदोलन का सामाजिक और सांस्कृतिक आधार
- भक्ति आंदोलन का भाषा, संस्कृति और कला पर प्रभाव
- भक्ति आंदोलन की दार्शनिक पृष्ठभूमि
- निर्गुण संत और भारतीय ज्ञान परंपरा
- भक्ति साहित्य में गुरु-शिष्य परंपरा
- भक्ति साहित्य में लोक तत्व और सांस्कृतिक विविधता
- दक्षिण भारत के आलवार और नायनार संतों का योगदान
- समकालीन संदर्भ में भक्ति साहित्य कि प्रासंगिकता
- भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी चेतना और भक्ति साहित्य
- दक्षिण भारतीय भक्ति आंदोलन और चिंतन परंपरा
- भक्ति साहित्य में नैतिकता, करुणा और सामाजिक समरसता
- भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में सूफी-भक्ति संवाद
- भक्ति साहित्य : भाषा, लोकबोध और ज्ञान का लोकतंत्रीकरण
- संत काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की अभिव्यक्ति

- भक्ति साहित्य में आत्मबोध और मोक्ष की अवधारणा
- समकालीन संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता
- भक्ति साहित्य और भारतीय सामाजिक परिवर्तन
- भक्ति आंदोलन में नारी की भूमिका
- भक्ति साहित्य के आईने में स्त्री
- नारी संत परंपरा और भक्ति साहित्य
- भक्ति आंदोलन और हिन्दी की साहित्यिक परिधि
- भक्ति साहित्य में पर्यावरण चेतना
- सूफी और भक्ति परंपरा: ज्ञानात्मक संवाद और सांस्कृतिक समन्वय
- भारतीय ज्ञान परंपरा और निर्गुण-सगुण भक्ति का वैचारिक आधार
- सगुण भक्ति में कथा, काव्य और भाषिक संरचना
- भक्ति साहित्य में बोली, मुहावरे और लोकप्रतीक
- भक्ति साहित्य: मौखिक परंपरा और ज्ञान संचरण
- भक्ति साहित्य में बहुभाषिकता और सांस्कृतिक समन्वय
- भक्ति साहित्य और अनुवाद की समस्या
- स्त्री संतों की भाषा और अनुभवजन्य ज्ञान
- भक्ति साहित्य में भाषा और सत्ता-विमर्श
- भक्ति साहित्य में नैतिकता, करूणा और सामाजिक चेतना

महत्वपूर्ण तिथियां:

पंजीकरण आरंभ की तिथि: 20 जनवरी, 2026
पंजीकरण की अंतिम तिथि: 01 मार्च, 2026
शोध सारांश भेजने की अंतिम तिथि: 15 फरवरी, 2026
शोध सारांश स्वीकृति की तिथि: 20 फरवरी, 2026
सम्पूर्ण शोध आलेख भेजने की तिथि: 01 मार्च, 2026

विशेष नोट: इच्छुक प्रतिभागी अपना शोध सारांश (अधिकतम 300 एवं बीज शब्द अधिकतम 5 शब्द) और सम्पूर्ण शोध आलेख (अधिकतम 4000 शब्द) यूनिकोड फॉण्ट/Times New Roman में टंकित कर isbscujhindi2026@gmail.com ईमेल पर भेज दें। चयनित शोध आलेखों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जायेगा। शोध आलेख केवल हिंदी और अंग्रेजी भाषा में स्वीकार्य होंगे।

पंजीयन शुल्क

प्राध्यापकों के लिए- 1500/-
शोधार्थियों/ पोस्ट डॉक्टरल फ़ेलो के लिए- 1200/-
विद्यार्थियों के लिए- 700/-
विदेशी प्रतिभागियों के लिए- $25

शुल्क जमा करने हेतु

Name of Account Holder: INTERNATIONAL SEMINAR ON BHART
Name of the Bank : Punjab National Bank
Branch Address: CUJ Brambe
Account No. : 7277000100023647
IFSC Code : PUNB0727700
Swift Code : PUNBINBBRAN

ऑनलाइन पंजीकरण हेतु लिंक

https://forms.gle/LBKeckfAjCqydpbe7

Scan the QR for Registration

पंजीयन/ अन्य जानकारी के लिए संपर्क करें:
भुवनेश प्रधान (शोधार्थी) : +917033317838, रामश्याम (शोधार्थी) : +917050636358,
अंशु प्रिया (शोधार्थी) : +919170459152